Year-9-10; 2018-19
ISSN–2231-1130

Impact Factor – 3.521(IIJIF)
●●●●VEETHIKA●●●

महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन

श्वेता मिश्रा*

शोध सारांश

''ज्ञानं मनुजस्य तृतीय नेत्रं'' वेदो में ज्ञान को मनुष्य के तृतीय नेत्र की संज्ञा दी गई है क्योकि जहाँ ज्ञान मनुष्य को संसार भर की विशिष्ट सूचनाओं के भण्डार से परचित कराता है वहीं यह मनुष्य को समानता, स्वतंत्रता, न्याय जैसे आवश्यक मूल्यों के उपयोग एवं अपने अधिकारों के प्रयोगों के माध्यम से समाज का एक योग्य नागरिक बनने में सहयोग करता है। ज्ञान के अर्थ को वर्तमान में शिक्षा के पर्याय में ग्रहण किया जाता है। शिक्षा मनुष्य को शिक्षित करने का काम करती है तो दुसरी ओर यह समाज में होने वाले परिवर्तनों के अनुरूप अपने को ढाल लेती है। समाज में सबकी अपनी भाषा, रहन–सहन, खान–पान का ठंग, मान्यता एंव विश्वास होता है। जिसके आधार पर शिक्षा की नीव रखी जाती है। इसी कारण जैसा समाज होता है, वैसी शिक्षा होती है और जैसी शिक्षा होती है, वैसा ही समाज होगा। स्त्री समाज का आधार कही जाती है यदि नींव ही कमजोर होती है तो भवन कैसे शक्तिशाली हो सकता है। यदि स्त्री ही शिक्षित नही है तो वह आने वाली पिढ़ी को सही मार्गदर्शित नही कर पाती है जिससे कि समाजिक विकास नही हो सकता।

गांधी जी ने कहा था कि स्त्री ईश्वर की श्रेष्टतम रचना मानते है। उन्हानें इस बात को स्पष्ट किया था कि पुरूष व स्त्री का कार्य क्षेत्र थोड़ा भिन्न है लेकिन उनकी संस्कृति समान होती है, इसलिए स्त्री पुरूष दोनों को ही समान शिक्षा व जनसंचार के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं0 जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था कि "परिवार में लड़के की शिक्षा एक ही सदस्य की शिक्षा होती है परन्तु परिवार में लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा होती है। विगत वर्षो में घर से बाहर स्त्री की भूमिका देश के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन गयी है। इस दृष्टिकोण से स्त्रियों के प्रशिक्षण व रोजगार की समस्या पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सा, शिक्षण और समाज सेवा जैसे क्षेत्रों में स्त्री महत्वपूर्ण योगदान दे रही है परन्तु यह केवल शहरों तक ही सीमित है। गावों में आज भी स्त्री शिक्षा एवं संचार को उचित रूप से सही दिशा नही मिल रही है।

मुख्य शब्द – स्त्री, शिक्षा, संचार।

प्रस्तावना

जिस तरह से ऑक्सीजन जीवन के लिए आवश्यक है उसी प्रकार शिक्षा भी मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसको जनसंचार के माध्यम से और बेहतर एवं सरल बनाया जा सकता है। शिक्षा से वंचित मनुष्य पूर्णत :जानवर के समकक्ष है। यह शिक्षा ही है जो मनुष्य को बुद्वि के साथ–साथ चेतना भी प्रदान करती है। यह व्यक्ति को जीवन के सत्य से अवगत कराती है। शिक्षा प्राप्त करना एवं जनसंचार के माध्यमों का उपयोग करना स्त्री–पुरूष दोनों का अधिकार है और दोनों के ही लिए आवश्यक है। वस्तुतः देखा जाये तो पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों के लिए शिक्षा एवं जनसंचार का ज्ञान ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि स्त्री को आने वाली पीढ़ी को भी प्रशिक्षित करना है। भारत के इतिहास को ही देखें तो महिलाए हर परिस्थिति में चाहें उच्च हो अथवा निम्न के बीच हमेशा ही संघर्षरत रही है। समय के साथ विभिन्न समाज सुधारको ने हस्तक्षेप किया जिससे महिलाओं में चेतना जागृत हुई। आज के समय में महिलाएं अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति अधिक प्रयत्नशील और चिन्तनशील होती जा रही है। आज वे अपने प्रति हो रहे शोषण के प्रति आवाज भी उठाने लगी है। इस बदलाव का सबसे बड़ा कारण शिक्षा एवं जनसंचार को ही कहा जा सकता है। महिलाओं के लिए शिक्षा एवं जनसंचार उस अस्त्र के समान है जिसने उन्हें सफलता के उच्च पायदान पर लाने में मुख्य योगदान दिया है। शिक्षा को बेहतर और प्रभावी बनाने में सबसे बड़ा योगदान जनसंचार का है क्योंकि भारत में आज भी बहुत से स्थान ऐसे है जहां स्कूल नहीं है वहां पुरुष तो दूर जाकर और परिस्थितियों का सामना करते हुए शिक्षा ग्रहण कर लेते है लेकिन महिलाएँ ऐसा नहीं कर पाती। इसके कई कारण हो सकते है।

प्लेटों की दृष्टि से स्त्री–पुरूषों का भेद नही करते थे। वें तो यहाँ तक कहते थें कि पुरूषों की भॉति स्त्रियों को भी सैनिक और दार्शनिक बनने का अधिकार है। स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में ऐसे विचार दियें जो आज भी जगत में सर्वमान्य है। प्लेटों स्त्री–पुरूष में शिक्षा की दृष्टि से कोई भेद नही करते थें। वें राज्य से अपेक्षा करते थे कि राज्य शिक्षा की व्यवस्था करें। स्त्री शिक्षा को कामेनियस ने समाज हेतु बडा महत्वपूर्ण बताया है। स्त्री

*शोधार्थी, मीडिया विभाग महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार

शिक्षा अपने आप में समाज को विकसित करने की क्षमता रखती है।

भारत में स्त्री शिक्षा की शुरूआत

प्राचीन काल के विषय में यदि बात की जाये तो स्त्री व पुरूष कि शिक्षा में भिन्नता पायी जाती थी। स्त्रियों को विशेष रूप से ललित कला, संगीत व नृत्य आदि की शिक्षा दी जाती थी। कात्यायन जैसे व्याकरणविदों का कहना है कि ऋक्वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा दी जाती थी। उस काल में भी स्त्री को पुरूष के समान सभी अधिकार प्राप्त थें। स्त्री को भी पुरूषों के समान ही दर्जा प्राप्त था। परन्तु 500 ईसा पूर्व स्त्रियों की दशा में गिरावट प्रारम्भ हुई। मुगल काल में इस्लामी आक्रमण ने स्त्री की स्वतंत्रता एवं अधिकारों को सीमित कर दिया। शिक्षा के अभाव में स्त्रियां अपनी भावनाओं, गुणों एवं कुशलताओं को अभिव्यक्त नहीं कर पाती थी। उनका जीवन घर की चहारदीवारियों के अदंर बंद रह जाता था। इन सबके बाद भी स्त्रियों ने शिक्षा, साहित्य एवं धर्म के क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त की थी, जिसमें राजकुमारी जहाँआरा, गुलबदन बेगम व जेबुन्निसाँ का नाम है, जो उस समय कि सुप्रसिद्ध लेखिका थी। राजा राममोहन राय जी ने उस समय में फैली कुरीतियों, जैसे बाल विवाह, सती प्रथा को दूर करने का अथक प्रयास किया। जिसके कारण स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन मिला। ईश्वरचंन्द्र विद्यासागर की प्रेरणा से बगांल में कई स्कूल लडकियों के लिए खोले गये। 1982 के भारतीय शिक्षा आयोग के अनुसार भारत सरकार की ओर से महिला शिक्षक प्रशिक्षण का प्रावधान हुआ। आयोग के द्वारा स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में अनेकों उत्साहवर्धक सुझाव प्रस्तुत किये। परन्तु किसी कारणवश कार्यन्वित नही हो सकें। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक भारत में स्त्री शिक्षा के लिए 12 उच्च शिक्षा के कॉलेज व 467 माध्यमिक विद्यालय और 5628 प्राईमरी विद्यालय थे। सम्पूर्ण भारत में छात्राओं की सख्या 4,44,470 थी। शताब्दी के अन्त तक शनै–शनै स्त्री उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही थी। किन्तु मुस्लिम छात्राओं का अभाव था। 20वीं शताब्दी उच्च शिक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण थी। डी०के०कर्वे द्वारा सन् 1916 मे प्रथम महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी थी। कर्वे जी ने इस बात का अनुभव किया कि स्त्री व पुरूष की शिक्षा उनके आदर्शो के अनुकूल होनी चाहिए। इसी वर्ष दिल्ली में लेडी हार्डिग मेडिकल कॉलेज की स्थापना हुई।

1946–47 में प्राईमरी स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालय, प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा तक की कक्षाओं में अध्ययन करने वाली में छात्राओं की कुल सख्या 41,56,742 हो गयी थी। 1947–48 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में कहा था कि स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के समान समानता प्रदर्शित कर चुकी है जिस कारण नारी आदर्श के अनुकूल प्रथक रूप से शिक्षा पर विचार करना महत्वपूर्ण है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के 10 वर्षो के पश्चात् 87,67,912 कुल छात्राओं की संख्या थी। 19 मई 1958 को स्त्री शिक्षा की समस्या पर विचार करने हेतु एक राष्ट्रीय समिति नियुक्त हुई। जिसमें इनकी समस्याओं पर बहुत गंभीरता पूर्वक विचार करने के पश्चात् स्त्री के लिए उपयुक्त सूची सरकार के सम्मुख प्रस्तुत की गयी थी। ब्रिटिश शासन काल के समय स्त्री शिक्षा का प्रतिशत केवल 2–6 था। 1961 में यह प्रतिशत बढ़कर 15.3 हो गया था। 1981 में यह प्रतिशत 28 आंका गया था। 2001 में 50 प्रतिशत स्त्री शिक्षा की ओर अग्रसर थी। 2011 में 65.46 स्त्री शिक्षा में आ चुकी थी। 2014 में केरल स्त्री शिक्षा में सबसे आगे है। वहाँ पर सबसे अधिक 86 प्रतिशत स्त्री शिक्षित थी। सबसे कम स्त्री साक्षरता दर उत्तरप्रदेश व बिहार राज्य में है। इससे कम साक्षरता का प्रतिशत राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्र में 12 प्रतिशत है। वर्तमान में भारत में स्त्री साक्षरता दर का प्रतिशत 70.3 है लेकिन वहीं पर जनसंचार के माध्यमों में सोशल मीडिया के उपयोग में इनका प्रतिशत 33.0 है। डिजिटल क्रांति आने के बाद भी महिलाओं का जनसंचार के माध्यमों का कम उपयोग करना उनकी समस्याओं को दर्शाता है। सरकार द्वारा समय–समय पर स्त्री शिक्षा सम्बन्धित कार्य करने के पश्चात् भी स्त्री शिक्षा पूरी तरह से विकसित नही हो पा रही है। आज भी कुछ परिवारों की स्त्रियां अशिक्षा की जकड़ में है विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र में उन्हें जनसंचार के माध्यमों से दूर रखा जाता है। स्त्री शिक्षा की समस्या आज भी समाज में बहुआयामी रूप में व्याप्त है।

स्त्री शिक्षा की आवश्यकता

पूर्व काल से ही विभिन्न विद्वानों के द्वारा स्त्री शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है जैसा कि स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि जब तक हम स्त्री को शिक्षित नही करते है, तब तक समाज को शिक्षित नही कर सकते है और जब तक समाज शिक्षित नही होगा, तब तक राष्ट्र का विकास सम्भव नही होगा। वे पूर्ण रूप से स्त्री शिक्षा के पक्ष में थे। वे अपने देश की स्त्री की दयनीय दशा के प्रति बडे सचेत थें। उसी प्रकार स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में राजा राममोहन राय के समय में स्त्रियों की दशा बडी शोचनीय थी। उनके समय में अनेकों कुरीतियाँ समाज में फैली थी। जिन्होने स्त्री को नरक में डाल दिया था। उन्होने स्त्रियों के अग्रणी अधिकारों के लिए प्रारम्भ से ही आवाज उठाई थी। पर वें जानते थे कि जब–तक स्त्रियां पढ़–लिख कर सशक्त नही होगी तब तक उनकी दशा नही सुधरेगी। और वें अपने अधिकारों के लिए सघर्ष करें और अपनी रक्षा करें।

महर्षि दयानन्द जी ने कहा था कि मातृ शक्ति के अभाव में कोई भी समाज अथवा राष्ट्र आगे नही बढ़ सकता, ऊँचा नही उठ सकता हैं। अतः स्त्रियों को पुरूषों की भांति ही शिक्षा देनी चाहिए। कहने का तात्पर्य है कि बिना स्त्री शिक्षा के राष्ट्र का विकास सम्भव ही नही हों पायेगा। आज प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियाँ महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। कहा जाता है कि बच्चें की प्रथम अध्यापिका उसकी मॉ होती है। जन्म से स्कूल जाने तक बालक सबसे अधिक अपनी मॉ से ही सीखता है।

संचार क्रांति का स्त्री शिक्षा पर प्रभाव

संचार क्रांति इस सदी की एक महत्वपूर्ण घटना के समान है। यह संचार क्रांति का ही परिणाम है कि विश्व के किसी भी कोने में घटित घटना कुछ ही समय में संपूर्ण दुनिया में संचारित हो जाती है। इंटरनेट के आने से ज्ञान का विस्फोट हुआ है। सोशल नेटवर्किंग के आने के बाद से वार्तालाप करने के अवसर बढ़तें जा रहे है। हमारी जीवन शैली को संचार क्रांति और जनसंचार माध्यमों ने बदल कर रख दिया है। स्त्री शिक्षा पर भी इसका बहुत प्रभाव पड़ा है। आज महिलाएँ देश के सर्वोच्च पदों पर आसीन है। ओलंपिक में ग्रामीण क्षेत्र से आने वाली महिलाएँ बढ़ चढ़ कर भाग ले रही है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। इस तरह की सूचना जब लोगों तक पहुँचती है तो उनके विचारों में भी बदलाव आता है। अगर कोई निर्धन परिवार की महिला अच्छा कार्य कर रही है तो जनसंचार के माध्यमों की वजह से लोग उसके बारे में जानते है और उसके कार्य को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक सहयोग करते हैं।

स्त्री शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाएँ

पारिवारिक कारण

स्त्री शिक्षा के मार्ग की सबसे बडी बाधा परिवार को माना गया है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग स्त्री शिक्षा के महत्व को नहीं समझते है, ना ही समझना चाहते है। 100 छात्राओं में से 80 ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा कम रहने के पीछे का कारण परिवार को माना है। पारिवारिक बाधाओं में उन्होनें जिन कारणों को अधिक महत्वपूर्ण माना है वो निम्न है

- माता पिता का अशिक्षित होना।
- लडकियों को पराया धन मानना।
- लड़कियों के प्रति पक्षपाती दृष्टिकोण।
- स्त्रियों को घर से बाहर ना जाने देना।
- स्त्रियों को पारिवारिक संवाद में शामिल न करना।

सामाजिक कारण

स्त्री शिक्षा के कम होने का दूसरा मुख्य कारण समाज में व्याप्त बुराइयों को माना गया है। 100 में से 90 छात्राओं ने स्त्री शिक्षा की बाधा को सामाजिक कारण बताया है। सामाजिक कारणों में जिन समस्याओं को मुख्य रूप से सामने लाया गया है वो निम्नवत् है–

- संकुचित दृष्टिकोण का होना।
- रूढ़िवादी समाज।
- खोखले रीति रिवाज।
- स्त्री को समाज में समान अधिकार ना देना।
- पुरूष प्रधान समाज।

आर्थिक कारण

स्त्री शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारणों में आर्थिक कारण भी प्रकाश में आये है। 95 प्रतिशत छात्राओं नें स्त्री शिक्षा में आर्थिक कारणों को महत्वपूर्ण बाधा के रूप में स्वीकार किया है।

सस्थांगत कारण

स्त्री शिक्षा में बाधा का एक और महत्वपूर्ण कारण संस्थागत बाधा भी है। स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों प्रशासन द्वारा कभी–कभी कुछ ऐसी बाधाएँ उत्पन्न कर दी जाती है जिससे स्त्री शिक्षा के स्तर में गिरावट आती है।

- छात्राओं के लिए स्कूल, कालेज में शौचालयों की उचित व्यवस्था का न होना।
- शिक्षण शुल्क का अधिक होना।
- छात्राओं के लिए पृथक विद्यालयों का ना होना।
- महिला शिक्षिकाओं का अभाव होना।
- विद्यालय से घर की दूरी का अधिक होना।

अन्य समस्या

स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में यदि अन्य समस्या की बात की जाये तो वो निम्न समस्या है–

- यातायात की समस्या।
- समाज में बढ़ती अपराधिक प्रवृत्ति।
- ऑनलाइन शिक्षा साइबर बुलिंग।
- साइबर क्राइम।

स्त्री शिक्षा में वृद्वि हेतु कुछ सुझाव

स्त्री शिक्षा में वृद्धि की यदि बात की जाये तो समय–समय पर सरकार एवं गैरसरकारी संगठनों द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास किये जाते रहे है। वर्तमान में इस

समस्या से निपटने के लिए कुछ उपयोगी बातों को ध्याान में रखना आवश्यक होगा।

- विद्यालयों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों द्वारा समय–समय पर माता–पिता को स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में जागरूक करना। जिससे की उनमें स्त्री शिक्षा के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण में परिवर्तन आये।
- महिला विद्यालयों की सख्या में वृद्वि की जानी चाहिए तथा स्कुल कालेजों आदि में शौचालयों आदि की पूर्ण व्यवस्था पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- शिक्षण में प्रगतिशील एवं मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाये।
- महिलाओं के लिए निर्देशन एवं परामर्श प्रदान किया जाना चाहिए।
- महिलाओं के लिए सुरक्षित वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए।
- बालिकाओं के लिए उपयोगी पाठ्यक्रम, अल्पकालीन शिक्षा आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- बालिकाओं को अपनी बात रखने के लिए उचित मंच प्रदान किया जाये साथ ही उन्हें डिजीटल माध्यमों का सही उपयोग करने का प्रशिक्षण दिया जाये।

निष्कर्ष

समय के साथ स्त्री शिक्षा की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। लेकिन ये अभी भी उतनी बेहतर स्थिति में नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा की समस्या आज भी गहन चिन्तन एवं विमर्श का विषय है। वर्तमान समाज में कभी परिवार, कभी रीती रिवाज, कभी समाज तो कभी त्याग और जिम्मेदारियां का हवाला देते हुए महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता है। हालांकि अब डिजिटल माध्यम उपलब्ध होने के कारण बहुत सी महिलाएं घर बैठे ही शिक्षा ग्रहण कर पा रहीं है। कुछ दुरस्थ शिक्षा के माध्यम का उपयोग करती है, परन्तुं आज भी ग्रामीण समाज में महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा अशिक्षित है जिन्हें पुरूषों के समान शिक्षा के समान अवसर प्रदान करके वर्तमान शिक्षा के प्रारूप को और भी बेहतर बनाया जा सकता है। शिक्षा के बढ़ते स्तर के कारण भारी मात्रा मे रोजगार का सृजन होता है। रोजगार में शिक्षित महिलाओं की बढ़ती हिस्सेदारी के कारण किसी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक व वैश्विक ढ़ाचाँ सुदृढ़ होता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मंसूरी, के0 आई0, एवं गुप्ता0 यू0 सी0 (2008). भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास, चावला ऑफसेट प्रिन्र्टस दिल्ली।
2. शर्मा, आर0 ए0 (2007). भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. भटनागर, सुरेश एवं कुमार, संजय (2006). भारत में शिक्षा का विकास, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली।
5- Indian educqtion review NCERT.
6- Journal of India education NCERT.
7- Jayapalan (2001). Indian Society and Social Institions, Atlantic Publisher & Distric.
8- Priyanka (2013). An Edcation Girl, an Education Future.
9- Report of education commission (2009)
10- Rajput, J. S. (1949). Education in a changing World- Practices and forces, Vikash Published House, New Delhi.
11- Saiyidain, K.G. (1965). Education; Science of education Raj Kamal Parkashan, New Delhi.
12- Sharma, R. A. (2003). Teacher Training Techonology, R.L. Book Depo, Meerut.
13- Rawat, P. L. (1968). History of Indian Education, Ram Prasad and Sons Agra.